नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

मौद्रिक स्थिरता और विकास का संतुलन

भारतीय रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) ने रेपो दर को 5.5 प्रतिशत पर अपरिवर्तित रखने का फैसला किया है. यह निर्णय ऐसे समय में लिया गया है जब भारतीय अर्थव्यवस्था अपेक्षाकृत स्थिर मुद्रास्फीति और अनुकूल मानसून के कारण सकारात्मक संकेत दिखा रही है. आरबीआई गवर्नर संजय मल्होत्रा ने साफ किया कि मौजूदा परिस्थितियों में नीतिगत दरों को स्थिर रखना ही आर्थिक वृद्धि और मूल्य स्थिरता के बीच संतुलन का सबसे उपयुक्त मार्ग है.

सबसे पहले, मुद्रास्फीति की तस्वीर देखें. फरवरी 2025 से लगातार दरों में कटौती के बाद खुदरा मुद्रास्फीति 4 प्रतिशत से नीचे है. अगस्त में यह 2.07 प्रतिशत के ऐतिहासिक निचले स्तर तक पहुंच गई. खाद्य कीमतों में नरमी और वैश्विक स्तर पर कच्चे तेल व कमोडिटी के उतार-चढ़ाव में स्थिरता ने इस स्थिति को मजबूत किया है. सरकार का लक्ष्य सीपीआई आधारित मुद्रास्फीति को 4 प्रतिशत के दायरे में बनाए रखना है और फिलहाल आंकड़े इस सीमा से काफी नीचे हैं. यह मौद्रिक नरमी का प्रत्यक्ष परिणाम है.

दूसरे, विकास दर की संभावनाओं पर नजर डालें. आरबीआई गवर्नर का आकलन है कि अनुकूल मानसून, मजबूत रेमिटेंस और उपभोग में सुधार से आर्थिक गतिविधियां गति पकड़ रही हैं. सुधारों, खासकर जीएसटी को सरल और युक्तिसंगत बनाने की दिशा में उठाए गए कदमों से विकास को अतिरिक्त बल मिलेगा. इससे न केवल उपभोग में वृद्धि होगी बल्कि उत्पादकता भी बेहतर होगी. हालांकि, चुनौतियां भी स्पष्ट हैं. आरबीआई ने आगाह किया है कि टैरिफ से जुड़े हालिया घटनाक्रम से वर्ष की दूसरी छमाही में विकास दर दबाव में आ सकती है. वैश्विक व्यापारिक तनाव और संरक्षणवादी नीतियां भारत जैसे उभरते बाजारों पर असर डाल सकती हैं.

निर्यात में संभावित सुस्ती और पूंजी प्रवाह में उतार-चढ़ाव से स्थिति कठिन हो सकती है. ऐसे में घरेलू सुधार और वित्तीय अनुशासन ही अर्थव्यवस्था की मजबूती की गारंटी होंगे. नीतिगत दरों में फरवरी से जून तक कुल 100 आधार अंकों की कटौती ने बैंकों को सस्ती ऋण दरें तय करने की गुंजाइश दी है. इससे आवास, ऑटो और एमएसएमई क्षेत्र को राहत मिली है. मांग में धीरे-धीरे सुधार दिख रहा है, जो रोजगार और औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि को गति देगा. परंतु, मौद्रिक नरमी का अर्थ यह भी है कि केंद्रीय बैंक को आगे मुद्रास्फीति पर बारीकी से नजर रखनी होगी. अगर कीमतों में अचानक उछाल आता है तो नीतिगत संतुलन बिगड़ सकता है.

इस समय अर्थव्यवस्था एक संक्रमणकालीन दौर में है. एक ओर वैश्विक अनिश्चितताएं हैं, तो दूसरी ओर घरेलू सुधारों का सकारात्मक प्रभाव. ऐसे में आरबीआई का तटस्थ रुख अपनाना विवेकपूर्ण कदम है. यह न तो अत्यधिक आक्रामक नरमी दिखाता है, न ही अनावश्यक सख्ती. यही संतुलन देश की विकास यात्रा को सुरक्षित रख सकता है. कुल मिलाकर भारतीय अर्थव्यवस्था की वर्तमान तस्वीर उत्साहजनक है. मुद्रास्फीति नियंत्रण में है, उपभोग और निवेश में सुधार के संकेत हैं और सुधारों से दीर्घकालिक मजबूती का आधार बन रहा है. लेकिन टैरिफ और वैश्विक उतार-चढ़ाव जैसी चुनौतियों को अनदेखा नहीं किया जा सकता. इसलिए मौद्रिक नीति समिति का यह निर्णय अर्थव्यवस्था को स्थिरता देने और विकास की संभावनाओं को संतुलित करने वाला है. आने वाले महीनों में यही सावधानी और संतुलन भारत को मजबूत विकास पथ पर बनाए रखेगा.

विजयादशमी संघ का स्थापना दिवस

राष्ट्र साधना के 100 वर्ष

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

> समाज में सदियों से घर कर चुकी जो बीमारियाँ हैं, जो ऊंच-नीच की भावना है, जो कुप्रथाएं हैं, ये हिन्दू समाज की बहुत बड़ी चुनौती रही हैं. ये एक ऐसी गंभीर चिंता है, जिस पर संघ लगातार काम करता रहा है. डॉक्टर साहब से लेकर आज तक, संघ की हर महान विभूति ने, हर सर-संघचालक ने भेदभाव और छुआछूत के खिलाफ लड़ाई लड़ी है. परम पूज्य गुरु जी ने निरंतर न हिन्दू पतितो भवेत्' की भावना को आगे बढ़ाया. पूज्य बाला साहब देवरस जी कहते थे- छुआछूत अगर पाप नहीं, तो दुनिया में कोई पाप नहीं! अपने इन संकल्पों को लेकर संघ अब अगली शताब्दी की यात्रा शुरू कर रहा है. 2047 के विकसित भारत में संघ का हर योगदान, देश की ऊर्जा बढ़ाएगा, देश को प्रेरित करेगा. पुनः प्रत्येक स्वयंसेवक को बहुत-बहुत शुभकामनाएं.

1 वर्ष पूर्व विजयदशमी के महापर्व पर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना हुई थी. ये हजारों वर्षों से चली आ रही उस परंपरा का पुनर्स्थापन था, जिसमें राष्ट्र चेतना समय-समय पर उस युग की चुनौतियों का सामना करने के लिए, नए-नए अवतारों में प्रकट होती है. इस युग में संघ उसी अनादि राष्ट्र चेतना का पुण्य अवतार है. ये हमारी पीढ़ी के स्वयंसेवकों का सौभाग्य है कि हमें संघ के शताब्दी वर्ष जैसा महान अवसर देखने मिल रहा है. मैं इस अवसर पर राष्ट्रसेवा के संकल्प को समर्पित कोटि-कोटि स्वयंसेवकों को शुभकामनाएं देता हूं. मैं संघ के संस्थापक, हम सभी के आदर्श परम पूज्य डॉक्टर हेडगेवार जी के चरणों में श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ. संघ की 100 वर्षों की इस गौरवमयी यात्रा की स्मृति में भारत सरकार ने विशेष डाक टिकट और स्मृति सिक्के भी जारी किए हैं.

जिस तरह विशाल नदियों के किनारे मानव सभ्यताएं पनपती हैं, उसी तरह संघ के किनारे भी सैकड़ों जीवन पुष्पित-पल्लवित हुए हैं. जैसे एक नदी जिन रास्तों से बहती हैं, उन क्षेत्रों को अपने जल से समृद्ध करती हैं, वैसे ही संघ ने इस देश के हर क्षेत्र, समाज के हर आयाम को स्पर्श किया है. जिस तरह एक नदी कई धाराओं में खुद को प्रकट करती है, संघ की यात्रा भी ऐसी ही है. संघ के अलग-अलग संगठन भी जीवन के हर पक्ष से जुड़कर राष्ट्र की सेवा करते हैं. शिक्षा, कृषि, समाज कल्याण, आदिवासी कल्याण, महिला सशक्तिकरण, समाज जीवन के ऐसे कई क्षेत्रों में संघ निरंतर कार्य करता रहा है. विविध क्षेत्र में काम करने वाले हर संगठन का उद्देश्य एक ही है, भाव एक ही है....राष्ट्र प्रथम

अपने गठन के बाद से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ राष्ट्र निर्माण का विराट उद्देश्य लेकर चला. इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए संघ ने व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण रास्ता चुना और इस चलने के लिए जो कार्यपद्धति चुनी वो थी नित्य-नियमित चलने वाली शाखाएं. संघ शाखा का मैदान, एक ऐसी प्रेरणा भूमि है, जहां से स्वयंसेवक की अहम् से वयं की यात्रा शुरू होती है. संघ की शाखाएं व्यक्ति निर्माण की यज्ञवेदी हैं. राष्ट्र निर्माण का महान उद्देश्य, व्यक्ति निर्माण का स्पष्ट पथ और शाखा जैसी सरल, जीवंत कार्यपद्धति यही संघ की सौ वर्षों की यात्रा का आधार बने. इन्हीं स्तंभों पर खड़े होकर संघ ने लाखों स्वयंसेवकों को गढ़ा, जो विभिन्न क्षेत्रों में देश को आगे बढ़ा रहे हैं.

संघ जब से अस्तित्व में आया संघ के लिए देश की प्राथमिकता ही उसकी अपनी प्राथमिकता रही. आज़ादी की लड़ाई के समय परम पूज्य डॉक्टर हेडगेवार जी समेत अनेक कार्यकर्ताओं ने स्वतंत्रता आंदोलन में हिस्सा लिया, डॉक्टर साहब कई बार जेल तक गए. आजादी की लड़ाई में कितने ही स्वतन्त्रता सेनानियों को संघ संरक्षण देता रहा, उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करता रहा. आजादी के बाद भी संघ निरंतर राष्ट्र साधना में लगा रहा. इस यात्रा में संघ के खिलाफ साजिशें भी हुईं, संघ को कुचलने का प्रयास भी हुआ. ऋषितुल्य परम पूज्य गुरु जी को झूठे केस में फंसाया गया. लेकिन संघ के स्वयंसेवकों ने कभी कटुता को स्थान नहीं दिया. क्योंकि वो जानते है, हम समाज से अलग नहीं हैं, समाज हमसे ही तो बना है. समाज के साथ एकात्मता और संवैधानिक संस्थाओं के प्रति आस्था ने संघ के स्वयंसेवकों को हर संकट में स्थित प्रज्ञ रखा है समाज के प्रति संवेदनशील बनाए रखा है.

प्रारंभ से संघ राष्ट्रभक्ति और सेवा का पर्याय रहा है. जब विभाजन की पीड़ा ने लाखों परिवारों को बेघर कर दिया, तब स्वयंसेवकों ने शरणार्थियों की सेवा की. हर आपदा में संघ के स्वयंसेवक अपने सीमित संसाधनों के साथ सबसे आगे खड़े रहते रहे. यह केवल राहत नहीं थी, यह राष्ट्र की आत्मा को संबल देने का कार्य था. खुद कष्ट उठाकर दूसरों के दुख हरना...ये हर स्वयंसेवक की पहचान है. आज भी प्राकृतिक आपदा में हर जगह स्वयंसेवक सबसे पहले पहुंचने वालों में से एक रहते हैं.

अपनी 100 वर्षों की इस यात्रा में, संघ ने समाज के अलग-अलग वर्गों में आत्मबोध जगाया-स्वाभिमान जगाया. संघ देश के उन क्षेत्रों में भी कार्य करता रहा है जो दुर्गम हैं, जहाँ पहुँचना सबसे कठिन है. संघ...दशकों से आदिवासी परंपराओं, आदिवासी रीति-रिवाज, आदिवासी मूल्यों को सहेजने-संवारने में अपना सहयोग देता रहा है...अपना कर्तव्य निभा रहा है.

संघ शताब्दी वर्ष

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ : राष्ट्र निर्माण के नए क्षितिज की यात्रा

डॉ. मोहन यादव

व्यक्ति, समाज और राष्ट्र निर्माण का ध्येय लेकर चले राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने आज अपनी स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण कर लिए हैं. संसार के सबसे विशाल और अनूठे संगठन की यह यात्रा त्यागए तपस्या, नि:स्वार्थ सेवा और अनुशासन का प्रतीक है. राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की यह यात्रा कई चुनौतियों और विषम परिस्थितियों में सेवा, समर्पण और संकल्प के ध्येय पथ पर आगे बढ़ी है. यह आद्य सरसंघचालक परमपूज्य डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार जी का संकल्प और प्रत्येक स्वयंसेवक का समर्पण है कि आज पूरे विश्व में संघ का ध्वज लहरा रहा है.

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना देश की असाधारण परिस्थितियों में हुई. भारत और भारत के स्वत्व के लिये जितना संकट अंग्रेजी राज से था उससे कहीं अधिक भारत विरोधी वे शक्तियां सक्रिय थीं जो भारत के पूर्ण रूपांतरण का कुचक्र रच रहीं थीं. इसे मालाबार, चटगांवए करांची और ढ़ाका की हिंसा से समझा जा सकता है. हिन्दुओं के सामूहिक नरसंहारए स्त्रियों के अपहरण पर भी देश में चुप्पी रही. एक ओर समाजए संस्कृति और राष्ट्र के दमन का कुचक्र चल रहा था दूसरी ओर भारतीय समाज अनेक आंतरिक विसंगतियों में उलझ गया था. जहां समाज विखंडन और अस्पृश्यता जैसा लोक व्यवहार प्रभावी था वहीं भारतीय समाज में आत्मगौरव कहीं खो रहा था. दासत्व की जंजीरों को ही अपनी नियति समझ लेने वाला विचार भी प्रभावी होने लगा था.

बालपन से ही राष्ट्र और सांस्कृतिक गौरव के प्रति समर्पित विशिष्ट प्रतिभा के धनी डॉक्टर जी के मन को यह सभी घटनाएं उद्वेलित कर रही थीं. डॉ. हेडगेवार जी स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी सेनानी थे. वे असहयोग आंदोलन में जेल यात्रा भी गये थे. भारत को दासत्व से मुक्ति संघर्ष में सहभागिता के साथ उन्होंने भारत में सांस्कृतिक और राष्ट्रभाव जागरण अभियान चलाने का भी संकल्प लिया. उन्होंने अनुभव किया कि जब तक प्रत्येक भारतीय के हृदय में स्वत्व का भाव जागृत नहीं होगा तब तक भारत पुन: अपने गौरव को प्राप्त नहीं कर सकता. डॉक्टर जी ने तत्कालीन सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति समर्पित विभूतियों से चर्चा की और संघ की स्थापना केलिये विजयादशमी की तिथि का चयन किया.

वर्ष 1925 में विजयादशमी को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अस्तित्व में आया. इस तिथि के निर्धारण में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना का ध्येय स्पष्ट है. विजयादशमी की तिथि और यह उत्सव स्वार्थरहित संघर्षए सत्य की स्थापनाए धर्म की रक्षा और मानवीय मूल्यों के पुनर्जागरण का संदेश देती है. यही संदेश राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की पूरी शताब्दी यात्रा में निहित है.

संघ की इस शताब्दी यात्रा की दो बड़ी विशेषताएं रहीं. एक तो संघ की ध्येय निष्ठाए संसार में केवल राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक मात्र ऐसा संगठन है जो अपने ध्येय पर अडिग है और निरंतर विस्तार पा रहा है. दूसरी विशेषता संघ पर होने वाले आक्रमणों की है. संघ पर वैचारिकए राजनैतिक हमलों के साथ स्वयंसेवकों पर प्राण घातक हमले हुए. लेकिन संघ की ध्येय यात्रा पर कोई बाधा नहीं डाल पाया. स्वतंत्रता के बाद तीन बार तो संघ पर प्रतिबंध लगे. गांधी जी की हत्या में झूठा फंसाकर स्वयं सेवकों को प्रताड़ित किया गया. आपातकाल में प्रतिबंध और प्रताड़ना भी संघ के स्वयंसेवकों ने झेली. वर्ष 1992 में अयोध्या घटना के बाद भी संघ पर प्रतिबंध लगा. कश्मीरए केरलए पश्चिम बंगाल आदि प्रांतों में आज भी संघ प्रचारकों पर हमले हो रहे हैं. लेकिन संघ कभी रुका नहीं, थका नहीं और न कोई स्वयंसेवक विचलित हुआ. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की इस शताब्दी यात्रा में मध्यप्रदेश की गौरव नगरी उज्जैन का भी अपना योगदान है. मध्यप्रदेश में संघ कार्य का विस्तार दो दिशाओं से हुआ. एक नागपुर से महाकौशल की ओर तथा दूसरा नागपुर से मालवा की ओर. मालवा क्षेत्र की गौरव नगरी उज्जैन वह स्थान है जहां संघ कार्य 1930 से 1940 के दशक में ही अंकुरित हो गया था.

(लेखक मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री हैं)

शताब्दी यात्रा में प्रचारकों के रूप में कई विभूतियां आगे आईं

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की इस शताब्दी यात्रा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें प्रचारकों के रूप में असंख्य विभूतियां आगे आईं, लेकिन किसी ने भी न अपने नाम की चिंता की न अस्तित्व और न ही जीवन की. वे सब राष्ट्र निर्माण कार्य की नींव में समा गये. संघ ने अपनी इस शताब्दी वर्ष यात्रा में समाज और राष्ट्रजीवन के आयाम को स्पर्श किया है. इस कार्य में शाखा से लेकर द्वार तक और फिर खेत पर जाकर भी संपर्क किया है. इसीलिए संघ कार्य आज इतना व्यापक हो पाया है. संघ कार्य केवल संगठनात्मक विस्तार नहीं है, यह साधना है. व्यक्तित्व निर्माण, समाज निर्माण और राष्ट्र निर्माण की. इसीलिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपनी शताब्दी समारोह को उत्सव के रूप में नहीं मना रहा. यह आयोजन राष्ट्र के परम वैभव और विश्व में भारत की सांस्कृतिक पुनर्प्रतिष्ठा के लिए संकल्प दिवस के रूप में है.

संघ : भारत की आत्मा का स्पंदन

विष्णुदत्त शर्मा

> संघ की एक और विशेषता है, नवाचार और युगानुकूलता को आत्मसात करना. इसकी शताब्दी यात्रा केवल परंपराओं के पुनरावर्तन तक सीमित नहीं रही है. हर युग में संघ ने युगानुकूल परिवर्तन को अंगीकार किया है. स्थापना काल से लेकर वर्तमान सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी के नेतृत्व तक संगठन ने अनेक नवाचार और आवश्यक बदलाव किए हैं. श्रद्धेय भागवत जी ने बौद्धिक जगत को नई दृष्टि दी, सामाजिक समरसता को केंद्र में रखा और यहाँ तक कि विश्व की धारणा बदलने का प्रयास भी किया. उनके नेतृत्व में संघ ने यह स्पष्ट किया कि हिन्दुत्व कोई संकीर्ण विचार नहीं, बल्कि समग्र मानवता को जोड़ने वाला दृष्टिकोण है और सह-अस्तित्व इसकी नींव है.

देश में संगठन और आंदोलन आते-जाते रहे हैं. कुछ समय के साथ क्षीण तो कुछ परिस्थितियों की आँधियों में बह गए और कुछ अपने मूल ध्येय को भूलकर अस्तित्वहीन हो गए. परंतु विश्व के संगठनात्मक इतिहास में शायद ही ऐसा कोई उदाहरण मिलता हो, जिसने न केवल सौ वर्षों की यात्रा की हो, बल्कि अनेक बार प्रतिबंधों, आलोचनाओं और वैचारिक हमलों के बावजूद अपने मूल ध्येय पर अडिग रहते हुए निरंतर विकास किया हो. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ इसी अनूठे उदाहरण के रूप में आज शताब्दी वर्ष मना रहा है. संघ के साथ हमेशा अदृश्य चुनौतियां भी रही है. तीन बार प्रतिबंध भी लगाया गया. किंतु, इतिहास साक्षी है कि प्रत्येक अवरोध के बाद संघ पहले से अधिक समर्थ व ऊर्जावान होकर उभरा. यह उसकी संगठनात्मक दृढ़ता और वैचारिक स्पष्टता का प्रमाण है. संघ-यात्रा केवल इस संगठन की ही नहीं, बल्कि भारत की आत्मा, हिन्दुत्व और सनातन संस्कृति की स्वाभाविक सहयात्रा भी है.

अपनी ध्येय यात्रा में संघ ने सदा ही संवाद और समरसता का मार्ग अपनाया. समरस भावना और आचरण से विरोधी धारणाओं को भी समय के साथ समाप्त किया. आज देशव्यापी शाखाओं में सामाजिक समरसता का प्रत्यक्ष अनुभव किया जाता है. संघ ने सदैव इस बात पर बल दिया कि राष्ट्रीय एकता केवल नारों से नहीं, बल्कि जीवन के आचरण और परस्पर व्यवहार से स्थापित होती है. इस दृष्टि से संघ का कार्य सनातन संस्कृति की गहरी परंपराओं से जुड़ा हुआ है. वह विभेद मिटाकर सभी को एक सूत्र में बाँधने की दिशा में प्रयत्नशील रहा है. इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि आज भारत के कोने-कोने में लाखों स्वयं सेवक संघ के माध्यम से समाज सेवा और राष्ट्र निर्माण में जुटे हैं.

राष्ट्रीय एकता और जनमत निर्माण में संघ का कार्य अनुकरणीय है. यह केवल शाखा या संगठनात्मक गतिविधियों तक सीमित नहीं, बल्कि पूरे भारत को एक सूत्र में बाँधने का ध्येय रखता है. श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन इसका प्रमुख उदाहरण है. दशकों तक बहसें और संघर्ष चलते रहे, पर संघ ने धैर्यपूर्वक देश का जनमत तैयार किया. अंतत: अयोध्या में श्रीराम मंदिर का निर्माण केवल धार्मिक उपलब्धि नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चेतना, आत्मगौरव, स्वत्व और जनभावना की विजय बना. यही संघ की विशेषता है कि वह सामाजिक व वैचारिक स्तर पर स्थायी और गहरा असर डालने वाले मुद्दों पर धैर्यपूर्वक आगे बढ़ता है. वास्तव में इसकी कार्यपद्धति अद्वितीय है.

स्थापना काल से ही संघ ने सदैव यह स्पष्ट किया कि राष्ट्र निर्माण का वास्तविक मार्ग व्यक्ति निर्माण से होकर ही जाता है. यही कारण है कि संघ से निकले स्वयंसेवक राजनीति, शिक्षा, साहित्य, विज्ञान, समाजसेवा और उद्योग हर क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ रहे हैं. यद्यपि संघ प्रत्यक्ष राजनीति से दूर रहता है, परंतु संघ की प्रेरणा से राजनीति में भी एक नई संस्कृति का प्रवाह हुआ. दीनदयाल उपाध्याय से लेकर नरेंद्र मोदी तक, ऐसे अनेक नेता सामने आए जिन्होंने राजनीति को केवल सत्ता प्राप्ति का साधन नहीं, बल्कि राष्ट्रसेवा का मार्ग माना. आज जब राजनीति में स्वार्थ और अवसरवाद के आरोप आम हो चुके हैं, तब संघ की यह बड़ी देन है कि राजनीति में सुचिता, समर्पण और राष्ट्र सर्वोपरि की धारा निरंतर बह रही है. आज भी संघ ही वह संगठन है जिसका कार्यकर्ता किसी सत्ता की आकांक्षा से प्रेरित नहीं होता, बल्कि वह अपने जीवन को समाज और राष्ट्र के लिए खपा देने की प्रेरणा पाता है. संघ से निकले असंख्य आत्मविश्वासी, अनुशासित और राष्ट्रनिष्ठ स्वयंसेवक समाज के विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट योगदान कर रहे हैं. वस्तुत: संघ ने अपने सौ वर्षों में समाज को संगठित करने की साधना की है. संघ का आशय केवल किसी संस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि वह संगठन शक्ति का जीवंत प्रतीक है. अकेला व्यक्ति चाहे कितना ही सक्षम क्यों न हो, जब समाज संगठित होता है, तब असंभव भी संभव हो जाता है.

संघ कार्य का संदेश है कि संगठित शक्ति ही वास्तविक वैभव दिखाती है और वही राष्ट्र को सही दिशा देती है. वास्तव में मेरे लिए यह सब केवल सैद्धांतिक बातें नहीं हैं, बल्कि प्रत्यक्ष जीवन का अनुभव हैं. लगभग चालीस वर्ष पूर्व मैंने स्वयं इस आकर्षण को अपने भीतर पाया और संघ से जुड़ा. मैं अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से जुड़ा, तो मैं ऐसे क्षेत्र से आता था जहाँ संकीर्णता और जड़ता गहरी थी. यदि युवा काल में संघ से जुड़ाव न हुआ होता, तो संभव है कि मेरी जीवन-दिशा भटक जाती. परंतु संघ के संस्कारों ने मुझे सार्थक जीवन दिया. राष्ट्र सर्वोपरि के विचार ने मुझे देशसेवा की ओर उन्मुख किया और यह

(लेखक मध्य प्रदेश भाजपा के पूर्व अध्यक्ष एवं लोकसभा सदस्य हैं)

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12039 - डॉ. सागर खादीवाला

1	2		3		4	■	5
6		■		■	7	8	
■		■	9	10			
11			■	12			■
13		■	14			■	15
16		17	■		■	18	
	■	19	20		21		■
22				■	23		

बाएं से दाएं
1. क्रिकेट के एक इतिहास पुरुष 6. धुन, गीत गाने का सुंदर ढंग 7. मगर या घड़ियाल, बारह राशियों में से एक 9. नाम रखने का काम या संस्कार 11. ऐसा समय जिसमें भोजन खूब मिले तथा अन्न की उपज पर्याप्त हो, सुकाल (सं.) 12. बिछाना 13. प्रवाह, किसी दिशा में किसी वस्तु या तत्व का निरंतर प्रवाहित होना, दफा 14. रूपवान, खूबसूरत 16. प्रतियोगिता, भेंट, मुलाकात 18. चिट्ठी, खत, पर्ण 19. शिकार खेलने की जगह (उर्दू) 22.पृथ्वी के नीचे के लोकों का छठा लोक 23. निगलना

ऊपर से नीचे
1. शाख 2. देखने में सुंदर 3. डर दिखाना 4. नमक निकालने या बनाने का स्थान (उर्दू) 5. कीर्तिगायक, भाट (सं.) 8. निपटाना, बनाना 10. सहायक, सहायता करने वाला 11. अमृत का समुद्र (सं.) 15. तस्वीर, रेखाओं अथवा रंगों द्वारा बनी हुई किसी वस्तु की आकृति 17. नष्ट किया हुआ (सं.) 18. किसी कार्य का अपनी ओर से आरंभ 20. समय, मृत्यु 21. दुर्वचन, कलंकपूर्ण आरोप

Solution 12038

अ	स	मा	न	■	क	पि	ल
सं	त	■	न	कु	ल	■	द
ग	ह	न	■	ह	ह	र	ना
ति	■	शे	र	नी	■	ज	■
■	श्या	म	ल	■	सु	ता	न
म	का	न	■	अ	वि	च	ल
चा	हा	■	सं	ग	दि	ल	■
न	री	■	■	रू	प	■	पी

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में सामाजिक कार्यो में संलग्नता रहेगी, व्यापार व्यवसाय में वृद्धि होगी, राजनैतिक लाभ होगा, वर्ष के मध्य में व्यवसाय की स्थिति मेंसुधार होगा, आय के अन्य स्त्रोतों में वृद्धि होगी, पूर्व परिचित से भेंट होगी, सफलता मिलेगी, मन में प्रसन्नता रहेगी, वर्ष के अन्त में अनावश्यक विवाद से मन खिन्न रह सकता है, स्थान परिवर्तन का योग है. मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को शारीरिक कष्ट और मानसिक चिन्ता रहेगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों का दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा, शुभ समाचार मिलेगा,.

कर्क राशि के व्यक्तियों को आर्थिक लाभ होगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को परिश्रम व उदासीनता रहेगी, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को खानपान पर ध्यान देना पडेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को आपसी सामंजस्य के साथ काम लेना हितकर रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक दुबला पतला लंबे कद का भावुक और खर्चीले स्वाभाव का होगा, यह महत्वाकांक्षी, कल्पनाप्रिय, स्थिर बुद्धि का होगा, शिक्षा विभाग में उच्च पद प्राप्त करेगा, माता पिता का भक्त होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

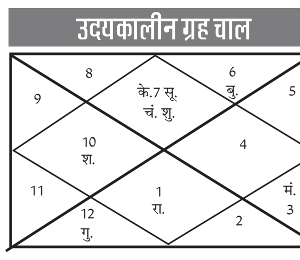

पंचांग

रा.मि. 10 संवत् 2082 आश्विन शुक्ल दशमीं गुरूवासरे दिन 2/56, उत्तराषाढ़ नक्षत्रे प्रात: 6/18, सुकर्मा योगे रात 9/56, गर करणे सू.उ. 6/6, सू.अ. 5/54, चन्द्रचार मकर, पर्व- श्रीदुर्गा विसर्जन, विजया दशमीं, दशहरा, शु.रा. 10, 12,1,4,5,8 अ.रा. 11,2,3,6,7,9 शुभांक- 3,5,9.

व्यापार भविष्य

आश्विन शुक्ल दशमीं को उत्तराषाढ़ नक्षत्र के प्रभाव से गेहूँ, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, मूँग, मोठ, रूई, सोना, गुड़, खांड़, के भाव में तेजी होगी, चांदी के भाव चाल मंदी की रहेगी, वायदा विचार आज हाजिर मार्केट में पिछले दिन के बने भाव पर व्यवसाय कर लाभ प्राप्त करें, भाग्यांक 2492 है.

मेष- खानपान में सावधानी रखें, रोजगार के नये अवसर मिलेंगे, जमीन जायजाद संबंधी विवाद को टालने का प्रयास करें, महिला जाति की सलाह ले.

वृषभ- सुख सुविधा पर खर्च होगा, जिसे चाहते हैं, उससे मन की बात कह दें, रिश्ते मजबूत होंगे, आर्थिक समस्याओं का सरलता से समाधान होगा, स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी.

मिथुन- निजी कार्यो के लिये सिफारिश करना पड़ सकती है, मेहनत का लाभ मिलेगा, व्यापार व्यवसाय में सुधार होगा, परोपकारी कार्यो में सुख मिलेगा.

कर्क- जीवनसाथी की भावना का सम्मान करें, अपनों की मदद से प्रसन्नता मिलेगी, मनोरंजन भ्रमण आमोद प्रमोद के अवसर मिलेंगे.

सिंह- अटकी योजनाओं में प्रगति होगी, उच्च अध्ययन के लिये दूर जाना पड़ सकता है, आय से अधिक धन व्यय होगा, दैनिक कार्यो में बाधा आयेगी.

कन्या- विरोधी परेशान करेंगे, अधिकारियों के संपर्क से लाभ मिलेगा, विशिष्टजनों के संपर्क से नया कार्य बनेगा. मित्र से मिलन होगा.

तुला- कामकाज में देरी से तनाव बढ़ेगा, बुजुर्गो के स्वास्थ्य का ध्यान रखें, नौकरी संबंधी अधिकारियों से मेल मुलाकात होगी, विवादास्पद कार्यो को टालें.

वृश्चिक- दौड़ धूप से कामकाज बनेंगे, सामाजिक कार्यो में बढ़चढ़ कर हिस्सा लेंगे, यश और कीर्ति मिलेगी, दूर गये मित्र के संबंध में सुखद समाचार प्राप्त होगा.

धनु- नई जिम्मेदारी आने से व्यस्तता बढ़ेगी, भावुकता में लिये ये फैसले बदलना पड़ेगे, स्वास्थ्य के संबंध में सुधार होगा, खानपान पर नियंत्रण रखें.

मकर- राजकीय मामले पक्ष में सुलझेंगे, कानूनी मामले पक्ष में मजबूत होंगे, पारिवारिक शत्रुता में वृद्धि होगी, अनावश्यक खर्च होगा, संयम बनाये रखें.

कुम्भ- उलझनें दूर होंगी, चुप रहने से लोग गलत समझ सकते हैं, आय के स्त्रोत बढ़ेंगे, अतिथि आगमन का योग है, मैत्री संबंधी प्रगाढ़ता आयेगी.

मीन- नये सौदे के कार्य बनेंगे, धार्मिक कार्य में खर्च की संभावना है, राजकीय कार्य में सफलता प्राप्त होगी, व्यापार व्यवसाय उत्तम रहेगा.

SUDOKU 7171

		8			4			
1								9
3				2			5	
			1				8	
		5				4		
	7				9			
	6			3				2
9								1
			8			7		

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-डोकू 7170

6	3	8	5	2	1	4	7	9
7	9	1	4	6	3	5	8	2
2	4	5	7	9	8	6	3	1
9	1	3	2	5	4	8	6	7
4	6	2	8	1	7	9	5	3
5	8	7	6	3	9	1	2	4
3	2	4	1	8	5	7	9	6
8	7	6	9	4	2	3	1	5
1	5	9	3	7	6	2	4	8